।। रचना ग्रंथ ।।

मारवाडी + हिन्दी

✻

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ रचना ग्रंथ लिखंते ||

|| चोपाई ||

परापरी प्रमात्म देवा || अमर पुरष अबिनासी ||
तां अंछया अेक पुरष ऊपना || सत लोक के बासी || १ ||

परात्परी परमात्मा देव अमर पुरूष अविनाशी है । उनकी इच्छा से एक पुरूष उत्पन्न हुआ और वह सत लोक मे रहने लगा । || १ ||

वां की अंछया निरंजन कहिये || ओऊँकार सो हुवा ||
ओऊंकार करले महतत्त आगे || पांचा तत्त गुण जूवा || २ ||

उसकी इच्छा से निरंजन बना । निरंजन ॐकार हुआ और ॐकार ने महतत्व को बनाया । महतत्व से पाँच तत्व हुए । आकाश का शब्द,वायुका स्पर्श,अग्नी का रूप,जल का रस और पृथ्वी का गंध,ऐसे अलग अलग गुण के पांच तत्व बने । || २ ||

उपजी सगत महातत्त माही || गुण तिनु प्रकासा ||
उभी सक्त महतत्त आगे || कोण पुरष को दासा || ३ ||

महतत्व से शक्ती उत्पन्न हुयी । उसने त्रिगुण का प्रकाश किया इसलिए उसे त्रिगुणी माया कहा गया है वह शक्ती महतत्व के सामने आकर खडी हुयी और पुछी,कि मेरा पुरूष कौन है और दास कौन है । ||३ ||

हुवो सकार सब्द सो बदिया || तीन लोक सो कीजे ||
अेसी दया करी साहेब ने || सत मान सुण लीजे || ४ ||

महतत्व साकार होकर शब्द बोला कि तुम तीन लोकों की रचना करो ऐसी तुम्हारे उपर मालिक ने दया की है । यह सत्य मानकर सुन लो । || ४ ||

चिंता पड़ी ईसरी मांही || कुण बिध जुग बांधु ||
दीसे नही काहा अब कीजे || हुकम कोण पर सांधू || ५ ||

उस ईश्वरी माया को चिन्ता हुयी की यह जगत किस तरह से बांधू याने रचना करू । कोई मुझे सहायता करनेवाला दिखाई देता नही,मै क्या करू,किसके उपर हुकूम चलाऊँ । || ५ ||

अेसो मत्तो कियो इण देवी || ध्यान पुरष को कीयो ||
अंड कटाक्ष ब्रम्हजळ माही || जलम बिस्न व्हाँ लीयो || ६ ||

उस देवी शक्ती ने ऐसा विचार करके पुरूष का ध्यान किया । पुरूष का ध्यान करते ही ब्रम्ह जल से अंडा उत्पन्न हुआ । उस अंड कटाक्ष मे से विष्णू ने जन्म लिया । || ६ ||

सूता बिस्न नाभ मे छूटी || चडियो कंवळ अकासा ||
ब्रम्हा जलम कंवळ मे लीयो || अवनी आस न बासा || ७ ||

सोये हुए विष्णू की नाभी मे से कमल निकलकर आकाश मे चढ गया । उस कमल मे से

ब्रम्हा ने जन्म लिया । ब्रम्हा का जमीन पर आसा-बासा नही था ।। ७ ।।

ब्रम्हा सीस भृकुटी माही ।। सुण संभु सो जाये ।।
वां सुंई सक्त बिस्न के पासा ।। सुण किरपा कर आये ।। ८ ।।

ब्रम्हा की भृगुटी मे से शम्भु ने जन्म लिया । तीनो को देखकर वहाँ से शक्ती पहले विष्णू के पास आकर बोली कि मै आयी हूँ । ।। ८ ।।

मो कूं परण करो घर बासा ।। तीन लोक से कीजे ।।
नारी पुरष बसावो जुग मे ।। हुकम मान सो लीजे ।। ९ ।।

मेरे उपर कृपा करके मुझसे शादी करके घर बसाओ । तीन लोको की रचना करके,स्त्री पुरूष संसार मे बसाओ,यह मेरा हुक्म मान लो । ।। ९ ।।

प्रणू नही बिस्न यूं बोले ।। तुम जननी मोय जाया ।।
मेटया हुकम कियो तब प्रळो ।। उलट उसी कुं खाया ।। १० ।।

विष्णू ने कहा कि मै तुमसे शादी नही करूँगा । तुम मुझे जन्म देने वाली माँ हो । विष्णू ने शक्ती का हुकूम नही माना तब शक्ती ने प्रलय करके उलट उस विष्णू को खा गयी ।।१० ।।

ब्रम्हा पास आण कर बोली ।। प्रण प्रण मुज तांई ।।
के तुजे मार खाक मे मेलूं ।। समज सोच उर मांई ।। ११ ।।

और ब्रम्हा के पास आकर शक्ती बोली मुझसे शादी करो शादी करो नही तो तुझे मारकर राख मे मिला दूँगी । तुम हृदय मे सोच-समझ ले । ।। ११ ।।

ब्रम्हा नटया दफे जब कीयो ।। सिव कूं कहे बतलायो ।।
परण परण के मार मिटाऊँ ।। सुत्त आप उर भायो ।। १२ ।।

ब्रम्हा के नही कहते ही ब्रम्हा को दफन कर दिया व महादेव के पास जाकर महादेव से शक्ती ने कहा मुझसे शादी करो,शादी करो,नही तो मारकर मिटा दूँगी । तुम मेरे हृदय मे भाये हो ।।१२ ।।

संभु सोच ध्यान जब कीयो ।। काहां ख्याल ओ होई ।।
तुम छो कोण कहां सूं आये ।। भेद बतावो मोई ।। १३ ।।

तब शम्भु ने सोच कर ध्यान किया कि यह क्या खेल है । यह दोनो को खाकर आयी है, उसी तरह मैने नही कहा तो वही गती मेरी भी होगी इसमे नही कहने से मौत है ऐसा सोचा । शंभूने कहा अहो आप कौन हो और कहाँ से आये हो यह सारा भेद मुझे बताइये । ।। १३ ।।

अंछया आद महतत्त कहियो ।। वां उतपत हे मेरी ।।
अंड कटाक्ष ब्रम्ह जळ तीनूं ।। जहां उसत्त हे तेरी ।। १४ ।।

शक्ती ने कहा कि प्रथम प्रधान पुरूष की इच्छा से महतत्व उत्पन्न हुआ । उस महतत्व से

मेरी उत्पत्ती हुयी है और अंड कटाक्ष ब्रम्हजल से तुम तीनो की उत्पत्ती है । ब्रम्हजल से अंडा,अंडे मे से विष्णु,विष्णू के नाभी से कमल,कमल से ब्रम्हा और ब्रम्हा की भृगुटी से तुम इस तरह से तुम्हारी उत्पत्ती है । मै तुम्हे जन्म देने वाली कोई माँ नही हूँ । ।। १४ ।।

तीनू लोक बसावण काजा ।। साहेब रीत बणाई ।।
दीया हुकुम बोहोत हुंसियार ।। तब मे चालर आई ।। १५ ।।

तीन लोको की रचना करने के लिए,मालिक ने स्त्री-पुरूष की रीत बनाई और रचना करने का मुझे हुकूम दिया इसलिए मै तुम्हारे पास चलकर आयी हूँ ।।१५ ।।

संभु कहे दुरस हम मानी ।। ब्रम्हा बिस्न ऊपावो ।।
से नही हुकम आपको फेरूं ।। करो तिका तुम चावो ।। १६ ।।

महादेव ने कहा ठीक है बात मैने मान लिया परन्तु ब्रम्हा और विष्णू को दुबारा उत्पन्न करो । मै तुम्हारे हुकूम को पलटाता नही हूँ फिर आपको जैसी चाहत हो वैसा करो । ।। १६ ।।

कीया पुरष फेर सो दोनू ।। यां अब मता ऊपाया ।।
प्रणो निसंक डरो मत कोई ।। तुम हम ओर न माया ।। १७ ।।

फिर शक्ती ने दोनो पुरूष ब्रम्हा और विष्णु को उत्पन्न किया । इन तीनो ने एकमत से विचार किया और शंभू बोला निशंक होकर इससे शादी करो । कोई डरो मत । तुम और हम एक ही माया है । ।। १७ ।।

देव कहे धारो बफ दूजो ।। गौरां सिव घर आई ।।
लक्ष्मी सरूप बिस्न कूं बरीयो ।। सायत्री द्विज ब्याई ।। १८ ।।

ब्रम्हा व विष्णू देव शक्ती से बोले कि तुम दूसरा शरीर धारण करो तब पहले गौरी(पार्वती), शिवके घर आयी आयी । लक्ष्मी के रूप मे विष्णू से शादी किया और वैसे ही सावित्री आयी उससे द्विज ब्रम्हा ने पाणी ग्रहण किया । ।। १८ ।।

च्यारूं मिल्या हूवा अब राजी ।। सुण चकडोल बणायो ।।
धरण अकास पंयाळ सो बंदिया ।। सक्त महा सुख पावो ।। १९ ।।

इस तरह ये चारो मिलकर खुश हुए । त्रिलोक का चकडौल याने आकार बनाने लगे । धरणी, आकाश,पाताल बनाये । यह देखकर शक्ती बहुत खुश हुयी ।।१९ ।।

थंबे नही होय मिट जावे ।। कर कर पच पच थाकी ।।
तब सुण आवाज भई घट भीतर ।। सत सब्द कर राखी ।। २० ।।

लेकिन पृथ्वी स्थिर होती नही थी मेहनत कर-करके थक गये तब घट मे(आकाश मे) आवाज हुयी कि सत शब्द जो सदैव रहता है,जिसका कभी भी नाश नही होता है उस सत्त के आधार से काम करो । ।। २० ।।

जब सुण ध्यान धर्‍यो घट भीतर ।। सुध ब्होत बिध आई ।।

दीयो जस साम स्मरथ कूं || करणा बो बिध खाई || २१ ||

तब सबने घट मे ध्यान किया तो सभीको बहुत तरहसे समझ आयी और चारोने पृथ्वी स्थिर होने का यश मालिक को दिया और अनेक प्रकार से करूणा करके मालीक की स्तुती की । || २१ ||

थंबिया पंयाळ ध्रण थंबाणी || फिर अकास थंबाणो ||
ब्रम्हा बिस्न महेसर सक्ति || नांव अधिक तब जाणो || २२ ||

तब पहले पाताल रूका फिर धरणी रूकी बाद मे आकाश रूका तब ब्रम्हा,विष्णु,महेश्वर और शक्ती ने सत शब्द नामको बडा जाना । || २२ ||

तीनु लोक रच्या भिन भिन्न कर || चवदा भवन बणाया ||
धर पाताळ किया सुण तेरे || सुरग इकीस कुवाया || २३ ||

तीन लोक की रचना भीन्न भीन्न प्रकरसे की। चौदह भवन भुर,भुवर,स्वर,महर,जन,तप, सत,तल,अतल,वितल,सुतल,तलातल,महातल,रसातल बनाअे। धरती बनायी,पाताल तेरह बनाये और इक्किस स्वर्ग बनाये । || २३ ||

थंबिया सबद चिदानंद टेके || सत्त शब्द आधारा ||
दिई सथा ब्रम्ह जळ थंबियो || मांड रची तां बारा || २४ ||

ये सभी शब्द के आधार से रूके । चिदानन्द ने सत शब्द के आधार से अपनी सत्ता दी तब पहले ब्रम्ह जल रूका फिर पृथ्वी की रचना की । || २४ ||

मंडप सीस बिराजे कोरम || दस द्रगपाळ बणाया ||
कोर्म पीठ सेंस को आसण || तां पर धरणी लाया || २५ ||

मंडप याने मेडूंक के उपर कुर्म रखा और कुर्म को याने कछुए को स्थिर रहने के लिए दस दृगपाल बनाये और कछुए के उपर शेष का आसन किया याने शेषको बैठाया उस शेष के फन के उरप धरणी लाकर रखी । || २५ ||

रच्यो सुमेर संमद सो कींया || सप्त द्विप तब बागा ||
सर्ग इकीस रचा गिरवर मे || च्यार पुरी सिर जागा || २६ ||

उस धरणी के उपर सुमेर पर्वत बनाया,समुद्र बनाये उस समुद्र के कारण सात द्विप अलग–अलग हुए । मेरू मे एक्किस स्वर्गो की रचना की । उसमे मुख्य चार पुरी बनाये । || २६ ||

कर अस्तान माय सो बेटा || अब हंस पुरष बणावे ||
तिनु लोक बसे जिव सारा || ज्यूं साहेब मन भावे || २७ ||

इस तरह से स्थान बनाकर उसमे वे बैठे और अब हंस के पुरूष बनाने लगे और वे मन मे समझे कि तीनो लोको मे सर्वत्र जीवो की वस्ती हो जायेगी तो यह बात मालिक के मन को अच्छी लगेगी । || २७ ||

ब्रम्हा बिस्न महेसर सक्ति ।। निस दिन पुरस बणावे ।।
जग मे एक रहे नही कोई ।। पाछा हर हर जावे ।। २८ ।।

ऐसा समझकर ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और शक्ती ये रात-दिन पुरूष उत्पन्न करने लगे परन्तु संसार मे एक भी रूके नही । वे जीव ब्रम्ह ध्यान करके पुन: ब्रम्ह मे मिल गये । ।।२८ ।।

द्रष्ट पसार ध्यान कर देख्या ।। पुरस ना दिसे कोई ।।
तीनु लोक पड्या सब सूना ।। कोहो कहां बिध होई ।। २९ ।।

ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने सोचा,कि अब पृथ्वी पर जीवों की बहुत वस्ती हो गयी होगी,उसे देखा जाय,ऐसा सोचकर दृष्टि फैलाकर ध्यान से देखा तो संसार मे कोई एक भी पुरूष,दिखाई नही दिया । तीनो लोक सब उजाङ पड़ा हुआ दिखाई दिया । तब आपस मे बोले कि यह क्या बात हो गयी । ।। २९ ।।

नारी पुरस अेक नही दीसे ।। तुम हम ब्होत बणाया ।।
कांहा जी गया कांहा उड बैठा ।। खबर करो किण खाया ।। ३० ।।

स्त्री और पुरूष एक भी दिखाई नही देते है व तुमने और हमने बनाये तो बहुत थे । वे कही चले गये या कही उडकर बैठ गये या कोई उन्हें खा गया क्या इसका पता करो ।।३०।।

धरियो ध्यान बिसन सिव ब्रम्हा ।। खबर जिवांकी आणी ।।
मिलीया जाय उलट साहेब मे ।। बोल्या उदबुद बाणी ।। ३१ ।।

तब विष्णू शिव और ब्रम्हा ने ध्यान करके देखा और जीवों की खबर लायी कि सभी जीव ब्रम्ह ध्यान करके उलट साहेब(मालिक)मे जाकर मिल गये,वे ऐसी अद्भुत वाणी बोले ।।३१।।

ब्रम्हा कहे बिस्न जीऊ आगे ।। सिव जु सक्त बुलावो ।।
जे जुग तीन बसण की आसा ।। तो कळ किमत लावो ।। ३२ ।।

तब ब्रम्हा ने विष्णू से कहा कि शिव और शक्ती को बुलाओ । यदी तुम्हे जगत और तीन लोक बसा ने की आशा है तो कुछ कला हिकमत बनाकर जीवो का ब्रम्ह ज्ञान भुला दो,नही तो अपना किया हुआ काम सब रद्द हो जायेगा ।) ।। ३२ ।।

च्यारूं मिल्या कियो मन सोभो ।। बोहो बिध सुख बणावो ।।
चाळा करो बहोत बिध भारी ।। जीव रिझता लावो ।। ३३ ।।

फिर चारो ब्रम्हा,विष्णू,महादेव और शक्ती ने मिलकर विचार किया कि जीवों के लिए अनेक तरह के सुख बना दो । उन सुखो मे भूलकर जीव ब्रम्ह ध्यान नही करेगा । अनेक प्रकार की भारी-भारी मोहक चरीत्र बनाओ उसमे जीव खूब रम जायेगा और ब्रम्ह ध्यान नही करेगा । ।। ३३ ।।

ब्रम्ह ध्यान सो द्यो चुकलाई ।। अेसी करो उपाया ।।

ध्यान ग्यान बहोता कर डारो ।। छेड़ो छेहन गाया ।। ३४ ।।

ब्रम्ह ध्यान करना भूल जाय ऐसी उपाय करो । ज्ञान और ध्यान बहुत से बना डालो कि उस ज्ञान का और ध्यान का अंत व पार गाते-गाते नही आवे । ।। ३४ ।।

जब सुण बिसन ऊठ कर बोल्या ।। में ब्रम्ह ध्यान छुडाऊं ।।
रिध सिध कळा करूं बोहो तेरी ।। धर अवतार रजाऊं ।। ३५ ।।

तब विष्णू उठकर याने खडा होकर बोला कि मै जीवो का ब्रम्ह ध्यान करना छुडाता हूँ । मै रीद्धि-सिद्धि बहुत सी कला बनाऊँगा,उस रीद्धि-सिद्धि मे सभी जीव ब्रम्ह ध्यान करना भूल जायेगे और मै अवतार लेकर संसार मे जाकर सबका ब्रम्ह ध्यान भुला दूँगा ।।३५ ।।

ऋषभ देव धुर प्रथ कहाणा ।। राज रसायण कीया ।।
कर कर कळा हंस डहकायर ।। सरण बिसण की लीयां ।। ३६ ।।

इस प्रकार संसार मे ऋषभ देव सर्व प्रथम आकर राजरीती बतायी । उसके पहले राजरीती नही थी । लेन-देन,माप-तौल,रूपये-पैसे ये कुछ भी नही थे,ऋषभ देव ने राज रसायन बनाया । अनेक प्रकार की कला बनाकर जीवो को भुलाने के लिए जाल बनाया और जीवो को विष्णू की शरण लेने का उपदेश दिया । ।। ३६ ।।

माया चेहेन तप बोहो साधन ।। ऊँसबद सराया ।।
पुजा अरचा धाम सो बंध्या ।। सुख संपत बोहो लाया ।। ३७ ।।

और भी माया के चेण(चरीत्र),तपश्या वगैरे बहुत सी साधना बतायी और ओअम् शब्द की सराहना की । पूजन-अर्चन करके धर्म बांधे और अनेक तरह के बहुत से सुख और सम्पत्ती लाया । ।। ३७ ।।

च्यारूं खाण बाण से कीया ।। बोहो बिध जीव बणाया ।।
ब्रम्हा बिसन महेसर सक्ती ।। ज्हाँ च्यारूं चल आया ।। ३८ ।।

चार खाणी अंडज,उद्भीज,अंकुर,जरायुज,चार वाणी परा,पश्यन्ती,मध्यमा,बैखरी के बहुत तरह के जीव बनाये फिर चारो ब्रम्हा,विष्णू,महेश और शक्ती चलकर आये । ।।३८।।

तो पण हंस ध्यान नही छोडे ।। तब ब्रम्हा उठ बोल्या ।।
च्यारूं बेद किया बोहो भारी ।। भिन भिन ताळा खोल्या ।। ३९ ।।

और आकर देखते है तो हंसो ने ब्रम्ह ध्यान करना छोड़ा नही तब ब्रम्हा उठकर खडा हुआ और बोला,कि मै चार वेद(ऋगवेद,यजुर्वेद,सामवेद और अथर्ववेद)बडे भारी-भारी,बनाया हूँ वेदो मे भिन्न-भिन्न तरह के भेद बताए गये है । इस कारण सभी जीव वेदो मे उलझ जायेगें और ब्रम्ह ध्यान छोड देगे । ।। ३९ ।।

फेर अवतार मेलिया जुग मे ।। जप तप जिग बिध कीया ।।
मंत्र ध्यान संजीवण कर कर ।। सत्त करे कर दीया ।। ४० ।।

और भी मेरे अवतार अठ्यांसी हजार ऋषी संसार मे मैने भेजे है । वे संसार मे जाकर

ब्रम्ह ध्यान को भुला देंगे और जप करना,तप करना,यज्ञ करना इनकी विधी जीवो को करने के लिए लगा देंगे और मंत्र,ध्यान,संजीवनी विद्या सत्य करके बता देंगे जिससे जीव ब्रम्ह ध्यान छोडकर ये सब करने लगेगे । ।। ४० ।।

उडे गडे देहे बोहोत बणावे ।। च्यार भुजा धर लेवे ।।
अेसा मंत्र किया बहु पेदा ।। हार कबु नही रेवे ।। ४१ ।।

वेदों मे ऐसे मंत्र बना दिए है कि उस मंत्र से आकाश मार्ग से उड जायेंगे । यहाँ धरती मे गड जायेगे । उस मंत्र बल से चार भुजा धारण कर लेंगे । ऐसे ऐसे मैने बहुत से मंत्र बनाये है,जिससे हमारी हार कभी भी नही होगी । ।। ४१ ।।

कीया पुराण ब्रम्ह कूं फांटया ।। न्यारा अंग दिखाया ।।
मेहेमा करी बोत बिध भारी ।। किरीया क्रणी लाया ।। ४२ ।।

और भी पुराण बनाकर ब्रम्ह को अलग करके जिसका पुराण उसकी महिमा करके अनेक तरह की क्रिया करनी,मैने पुराणो मे लाया है ।। ४२ ।।

तो पण हंस कोइक नही यारे ।। ब्रम्ह ध्यान नही छोडे. ।।
जब सिव सक्त गही कळ किमत ।। कसर कोर बोहो काढे ।। ४३ ।।

इतना किये तो भी एक भी हंस ने ब्रम्ह ध्यान नही छोडा तब शिव और शक्ती ये कला और हिकमत करके बची हुयी बहुत सी कोर–कसर निकालकर सुधारने लगे । ।। ४३ ।।

कीया रोग बीर बोहो पैदा ।। कवेसुर बैद्य बणाया ।।
काम ओर क्रोध मोहोर ममता ।। अे च्यारूं अंग लाया ।। ४४ ।।

ब्रम्हा व विष्णू से बोले कि यह तुमने सुख ही सुख बनाये । इसमे जीव नही भूलेगा । इसलिए हमने पहले रोग पैदा किया । रोग हुआ की दु:ख मे ध्यान करना भूल जाता है फिर रोग निवारणार्थ वैद्य और औषधी की व्यवस्था करनी पडती है तो बहुत से लोग वैद्य का काम सीखे । जडी,बूटी,खाक,भस्म,गुटीका,अवलेह वगैरे बनाकर,रोगी को देने के उद्योग मे लगाये यह करने मे ब्रम्ह ध्यान भूल गये और बहुत से वीर पैदा कर दिए वे लोगो के काम करने लगे इसमे ही बहुत से जीव भूल गये । कविश्वर बनाये,काम उत्पन्न किया,(काम शांती के लिए,स्त्री प्राप्त करने मे जीव उलझ गये ।) क्रोध बनाया क्रोध आया यानी झगडा फसाद करने मे,एक दूसरे को कटु बोलने मे,मार पीट मे लग गये,मोह बनाया(एक दूसरे का मोह होने से,उस मोह मे ब्रम्ह ध्यान भूल गये),ममता(मेरापन)पैदा किए ।(उस ममता मे ध्यान करना भूल गये),इस तरह से जीवों के चार तरह के स्वभाव बनाये । ।। ४४ ।।

खुद्या चाहा भ्रम दुख त्रस्ना ।। निद्रा बोहो बिस्तारी ।।
कीयो कपट झूट सो पेदा ।। कुबद अर कळा बिचारी ।। ४५ ।।

इतना होकर भी पहले भूख नही लगती थी तो भूख पैदा कर दी भूख लग जाने पर क्षुधा

निवारणार्थ अन्न वगैरह खाद्य पदार्थ उत्पन्न करने मे खेती आदी करने लगे । उसमे ब्रम्ह ज्ञान करना भूल गये चाहना उत्पन्न किया किसी भी वस्तु की चाहत उत्पन्न हो गयी यानी वह वस्तु प्राप्त करने मे उलझकर,ब्रम्ह ध्यान करना छोड दिए भ्रम पैदा किए,भ्रम मे पकडकर सत्य क्या और झूठ क्या,इसमे ब्रम्ह ध्यान भूल गये । दु:ख पैदा किये,तृष्णा उत्पन्न की । इतना होने पर भी,रात को ब्रम्ह ध्यान करते थे तो रात मे नींद पैदा कर दी । दिन मे इन कामो मे उलझे और रात को नींद लेने मे ब्रम्ह ध्यान छूट गया और भी कपट पैदा कर दिए,(कपट मे ध्यान नही होता है),झूठ पैदा कर दिए और कुबुद्धि कला करने का विचार प्रगट किअे ।।४५।।

मुरत बांद कियो सत्त पेदा ।। असुभ सुभ जग माही ।।
हंसा निकट अेक नही आवे ।। सब दोळा फिर जाही ।। ४६ ।।

मुर्ती बनाये । उस मुर्ती मे सत्व पैदा किए जिससे मुर्ती बोलने लगी,नैवेद्य खाने लगी,भविष्य कहने लगी । उस समय के जीव आज के जैसे मुर्ती पूजक नही थे । जब मुर्ती मे सत्व दिखाई देने लगा तब मुर्ती पूजा करने लगे । शुभ-अशुभ यह जगत मे पैदा किए तो भी एक हंस भी निकट मे नही आया । सभी जीव ब्रम्ह वापस फिर कर जाने लगे । ।। ४६ ।।

जब सुण जोग ब्होत बिध लाया ।। समज सरोदे कीयो ।।
काया मांय खंड पिंड सोजर ।। ग्यान ब्रम्ह ले दीयो ।। ४७ ।।

तब योग की विधी(अष्टांग योग,सांख्य योग आदी)अनेको बहुत से लेकर बताये । स्वरोदय की समझ बनायी । खण्ड मे और ब्रम्हाण्ड मे,वही पिण्ड मे दिखाकर ,यही ब्रम्ह ज्ञान है,ऐसा बता दिया । ।। ४७ ।।

बिछुं सरप बणाया केता ।। धर धर देही धाऱ्यां ।।
च्यारू बरण किया षट द्रसण ।। बोहो बिध सब्द उचाऱ्यां ।। ४८ ।।

और भी बिच्छू ,सर्प ये तरह-तरह के विषधारी जानवर धरती पर बनाये । यदी बिच्छू ने डंक मार दिया तो तकलीफ होने मे ब्रम्ह ध्यान छूट जाता है और उसकी उपाय मंत्र सीखने मे, मंत्र से झाड फूँक कराने मे,सर्प का मंत्र और दवा करने कराने मे ब्रम्ह ध्यान भूला दिए । पहले जात-पात कुछ भी नही थी तो चार वर्ण ब्राम्हण,क्षत्रिय,वैश्य और शुद्र पैदा किए । उसमे एक दूसरे को ऊंच और नीच मानने लगे । छ:दर्शन योगी, जंगम, सेवडा,सन्यासी,फकीर और ब्राम्हण बनाये । वे आपस मे हम बडे,दूसरे लोग छोटे मानकर ब्रम्ह ध्यान करना भूल गये बहुत प्रकार के शब्द तरह-तरह के ज्ञान उच्चारण करके,ब्रम्ह ध्यान भूला दिये ।। ४८ ।।

जंतर किया मंत्र बोहो तंतर ।। झाड़ा बोहोत बणाया ।।
बाजी ख्याल किया जुग हुन्नर ।। बिध बिध रामत लाया ।। ४९ ।।

यंत्र बनाये,मंत्र बनाये और तंत्र पैदा किए । झाडा-झपाटा(झाड-फूँक)बहुत से बना दिए । बाजीगर के खेल तथा हुन्नर संसार मे बनाये । अनेक तरह के खेल तमाशे बनाकर देखकर नये-नये खेल दिखाने और करने मे ब्रम्ह ध्यान भुला दिए ।। ४९ ।।

कीया ब्रत बोत भरमाया ।। ब्रम्ह ध्यान के काजा ।।
बिध बिध राग छतीसुं लाया ।। अनंत कोट सो बाजा ।। ५० ।।

बाद मे बहुत से व्रत-उपवास बताकर इसी मे जीव की भलाई है ऐसा बताकर जीव को भ्रमीत कर दिए। व्रत एकादशी,रोजा करने मे जीव को भ्रमीत कर दिए। छः राग,तीस रागीनी इस प्रकार से छत्तीस रागीनीयाँ पैदा किए। उसमे बहुत से गाने सुनने मे और बहुत से गाना गाने मे भुला दिए और बजाने के बाजे तो पार नही इतने अनन्त बना दिए। ।५०।

कीया पंथ बोत बिध भारी ।। बारा राहा चलाया ।।
भिन भिन भेद किया सुखदायक ।। वां ले साच दिखाया ।। ५१ ।।

अनेक तरह-तरह के भारी-भारी पंथ बनाकर उन सभी के अलग-अलग रास्ते बनाये । उसमे से बारह रास्ते अलग-अलग चलाए । जीव को सुख होगा ऐसे तरह-तरह के भेद बताये जिससे जीवो को सुख का भास होने लगा,तब जीव को सच लगने लगा व विश्वास होने लगा। ।। ५१ ।।

अब बस हुवा हंस सब सारा ।। सनमुख आयर बूझे ।।
कहो क्या करां हम स्वामी ।। ब्रम्ह ध्यान नही सुझे ।। ५२ ।।

तब सभी हंस इनके वश मे हुए और इनके सामने आकर पूछने लगे कि स्वामीजी कहिए अब हम क्या करे । हमे तो अब ब्रम्ह ध्यान सूझता नही है ।। ५२ ।।

जब सिव लाख सब्द सो कीया ।। षट शास्त्र सुण भारा ।।
न्हाक्यो भ्रम ब्रम्ह दिखलायो ।। छे मत छे अंग न्यारा ।। ५३ ।।

तब शिव ने लाख शब्द के छः शास्त्र बडे भारी बनाये। उस शास्त्रो मे बहुत भारी भ्रम डालकर भ्रम का ब्रम्ह बता दिया। छः शास्त्रो का मत अलग-अलग छः तरह के स्वभाव बताया। ।। ५३ ।।

अब सुण हंस अड़ण कूं लागा ।। भ्रम ऊपना मांही ।।
ओ कहे ब्रम्ह इसी बिध पावे ।। वो कहे तुजे गम नाही ।। ५४ ।।

अब शास्त्र सुनकर और देखकर हंस आपस मे अडने लगे। उनमे आपस मे ही भ्रम उत्पन्न हो गया। एक कहता है,कि ब्रम्ह इस विधी से मिलेगा,तो दूसरा कहता है,कि हट,तुमे मालुमात नही है,मै जो कहता हूँ वही सत्य है । ।। ५४ ।।

चूक्या ध्यान बंध कर मोही ।। माया ध्रम उठायो ।।
अब बोहो बात गई जग फैली ।। ब्रम्ह ध्यान नही पायो ।। ५५ ।।

इस तरह से इनमे बांधे जाने से,ब्रम्ह ध्यान भूल गये और माया का धर्म उठाकर धारण

कर लिया। अब यह बात जगत मे फैल गयी,जिससे हंस को ब्रम्ह ज्ञान प्राप्त होने की विधी बंद हो गयी ।। ५५ ।।

लागा छंद ध्यान अब भूला ।। बोहो मत्त धरम समाया ।।
अटक्या जीव मोख कूं जाता ।। उलट जग मेई आया ।। ५६ ।।

इस छंद मे लगकर अब ब्रम्ह ध्यान भूल गये। बहुत तरह के मत और तरह-तरह के धर्म लोगो ने धारण कर लिए। इस तरह से जीव मोक्ष मे न जाते बीच मे ही अटक कर जगत ही आने लगा । ।। ५६ ।।

मृत लोक अब बसणे लागो ।। जात पांत नही काई ।।
तपस्या ध्रम मुक्ता की बाता ।। निस दिन रहया समाई ।। ५७ ।।

अिससे मृत्यु लोक मे वस्ती होने लगी। उस समय जाती-पाती कुछ नही थी । तपस्या और धर्म यही मुक्ती की बात रात-दिन धारण करने लगे । ।। ५७ ।।

ब्रम्हा बिस्न महेसर सक्ती ।। फेर अेक मतो उपावे ।।
सुर्ग पंयाळ बसे सो कीजो ।। हंस आपणे आवे ।। ५८ ।।

ब्रम्हा,विष्णू,महेश्वर और शक्ती ने एक और विचार किया,कि मृत्यु लोक तो अब बसने लगा । परन्तु स्वर्ग और पाताल बसे ऐसा कोई उपाय करो । ।। ५८ ।।

तब सुण राह कीया सब पेदा ।। पंयाळ सुर्ग का न्यारा ।।
करणी ग्यान पंथ सो चाल्या ।। नाना बिध का सारा ।। ५९ ।।

तब स्वर्ग,पाताल के न्यारे-न्यारे सब रास्ते पैदा किया । वे नाना प्रकार के सभी रास्ते अलग-अलग करनी के और ज्ञान के चलने लगे । ।। ५९ ।।

तपस्या सत्त जत्त अे मार्ग ।। सुर्ग लोक का कीया ।।
तीर्थ वृत नारदी भक्ति ।। बिस्नु पंथ धर लीया ।। ६० ।।

जैसे तपश्या,सत याने माँगने वाले को जो माँगे वह दो ना कहो मत जत याने अपनी स्त्री के अलावा,दुसरी स्त्री से भोग नही करना यह रास्ता स्वर्ग लोक मे जाने का बनाया । तिर्थ,व्रत,नारदी भक्ती याने किर्तन भजन यह विष्णू के लोक मे जाने का मार्ग बनाया ।।६०।।

मंत्र धर्म गायत्री क्रिया ।। द्विज लोक को गेलो ।।
सिव को इष्ट धरम जप सिव को ।। सो केलासां जेलो ।। ६१ ।।

वेदो का मंत्र,धर्म गायत्री क्रिया यह ब्रम्हाके लोकमे जाने के रास्ते बनाये । और शिव का इष्ट,शिव का धर्म और शिव का जप,यह रास्ते कैलाश मे जाने के बनाये ।।६१।।

कन्या ध्रम आत्मा पांचूं ।। ब्रम्ह जाण कर पूजे ।।
ओ सुण पंथ सक्त को कहीये ।। बिस्न परे लग सूजे ।। ६२ ।।

कन्या दान करना,पंचभूती आत्मा को ब्रम्ह जानकर पूजना,यह विष्णू से भी आगे शक्ती

लोक जाने का बनाया । ।। ६२ ।।

अभेदान सुख सेज सहेती ।। गेणा बस्तर लावे ।।
ओ सुण पंथ बिस्न के आगे ।। सक्त लोक जां जावे ।। ६३ ।।

अभेदान याने भयभयीत को अभय करना और अपनी स्त्री को गहनो–कपडो के साथ दान करके पुन: मोल देके खरीदना,इसे भी अभेदान कहते है और सुख सेज सहित पलंग,गादी, रजाई आदी बिछाकर दान करना यह भी रास्ता विष्णू के लोक से आगे शक्ती के लोक मे जाने का बनाया । ।। ६३ ।।

आण सुध्ध कोई ध्रम न पकड़े ।। सेळ भेळ सब गावे ।।
ओ सुण पंथ उलट कर पाछो ।। भू लोक मे आवे ।। ६४ ।।

और कोई सोच समझकर धर्म धारण नही करने वाले सेल भेल मे याने मिश्रित धर्म करनेवाले सभी की भक्ती करनेवाले,अनेक धर्म धारण करनेवाले यह पंथ उलटकर भू–लोक मे आनेका किया । ।। ६४ ।।

सुन पाताळ पंथ ओ जासी ।। दया बिना तप कीया ।।
बिना गुर गम पांच कू पकड़े ।। मत जान पर दीया ।। ६५ ।।

और जिस धर्म मे दया नही है तथा दया के बिना तपश्या करते है,गुरू के ज्ञान के बिना पाँच इंद्रियो का दमन करते है तथा जीवो पे उदार होते है,ये पाताल मे रसा तल मे जायेगें ।।।६५।।

ब्रम्हा कहे सक्त के तांई ।। कर्म पंथ ओ होई ।।
वे कहो कोण नग्र कूं पोंचे ।। तके बतावो मोई ।। ६६ ।।

ब्रम्हा ने शक्ती से कहा कि यह तो कर्म पंथ है यह कर्म पंथ कौन से गाँव मे पहुँचेगा वह मुझे बताइये । ।। ६६ ।।

तब सो सक्त कहे सुण ब्रम्हा ।। जमराय सो कव्हावे ।।
वां को नग्र रच्यो गिर ऊपर ।। क्रम पंथ वा आवे ।। ६७ ।।

तब शक्ती ने कहा,कि ब्रम्हा सुनो,जिसे यमराज कहते है,उसकी नगरी सुमेर के उपर बनायी है । ये कर्म पंथ धारण करने वाले वहाँ जायेगें । ।। ६७ ।।

ब्रम्हा कहे जम सो कुण हे ।। कहा प्राक्रम होई ।।
किरपा करो कहो भिन भिन्न ।। केहे भेद बतावो मोई ।। ६८ ।।

तब ब्रम्हा बोला कि यह यम कौन है,उसका पराक्रम क्या है कृपा करके ऐसे यमका भिन्न भिन्न भेद खोलकर मुझे बताईये । ।। ६८ ।।

बोली सक्त आप उगत सुं ।। सूरज के सुत जायो ।।
तुम हम सिरे पूंछ हे भारी ।। ध्रमराय जम क्रायो ।। ६९ ।।

तब शक्ती ने कहा कि यह यम सुर्य का पुत्र है । तुम्हारे और हमारे उपर भी इस यम की

सत्ता और पहुँच है । वह हम सबके उपर है । उसे धर्मराय और यम कहते है ।।।६९ ।।

जब सिव बिस्न कही आ गाथा ।। ध्रमराय मत आणो ।।
तम हम सकळ बस सो हूवां ।। तां कूं काय उपाणो ।। ७० ।।

तब शिव और विष्णू बोले कि ऐसा धर्मराय मत लाओ । हम सब जिसके वश मे रहे उसे किस लिए उत्पन्न करना । ।। ७० ।।

सक्त कहे पाप पुन्न दोई ।। भेळा सदा न होई ।।
जमराय बिन कुण भुक्तासी ।। नर्क कुंड कहुँ तोई ।। ७१ ।।

तब शक्ती ने कहा कि पाप और पुण्य ये दोनो एक जगह कभी भी नही रह सकते तो फिर पापी जीव को नर्क कुण्ड यम के अलावा कौन भुगतायेगा । ।। ७१ ।।

कीयो जम दिवी कोटवाली ।। जम किंकर सब न्यारा ।।
पासी गुर्ज दिया कर आवध ।। पकड़ लिया जिव सारा ।। ७२ ।।

तब यम को पैदा करके उसे कोतवाली दिया और उसके सब किंकर याने दूत अलग-अलग बनाये । उन यमदूतो को प्राणियों को पकडनेके लिए फासी गुरूज वगैरह शस्त्र दिए । उसमे यम और यमदूतो ने सभी जीवो को पकड लिया । ।।७२ ।।

परबस पड़या हुवा जिव बेमुख ।। अब कहो कोण उबारे ।।
ब्रम्हा बिस्न मेहेश्र अर सक्ती ।। अेई मारे अई तारे ।। ७३ ।।

यम और ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और शक्ती के इन देवोके वश मे पडकर जीव(मालिक से) विमुख हो गये । अब जीवो को कौन छुडाएगा । ब्रम्हा,विष्णु,शिव और शक्ती यही जीवो को मारनेवाले और यही तारनेवाले बन गये । ।। ७३ ।।

भामा तो भगवत बण बेठी ।। ब्रम्हा भयो बिधाता ।।
बिस्न आपही ईश्वर बण बेठो ।। काळ रूप सिव नाथा ।। ७४ ।।

भोमा(माता शक्ती)तो भगवत बन कर बैठ गई। ब्रम्हा रचना करनेवाला विधाता बन गया । विष्णू स्वयं प्रतिपाल करने वाला ईश्वर बन गया। शिव यह काल रूप होकर संहार कर्ता बन गया । ।। ७४ ।।

भयो अन्यावं न्याव कुण बुजे ।। प्रबस पडया पुकारे ।।
पेली लेकर भोग भोगावे ।। पीछे गर्दन मारे ।। ७५ ।।

और ये जीवो पर अन्याय करने लगे । कोई न्याय करनेवाला नही रहा । सभी जीव उन देवों के वश होकर परतंत्र हो गये । इनके फासे मे पडकर जीव पुकार करने लगे । ये देव पहले जीवो को भोग-भोगने मे लगाकर,वे ही उस भोग के लिए,जीव को गुनाहगार ठहराकर,दंड देकर मारने लगे । ।। ७५ ।।

सूना जीव धणी बोहो तेरा ।। जिण तिण हात बिकावे ।।
ध्रमराय कूं आग्या कीनी ।। पाप पुन्न भुक्तावे ।। ७६ ।।

सूने याने बिना मालिक के जीव के उपर सम्हालने वाला एक मालिक रहा नही । जीवो के बहुत से मालिक हो गये। ये जीव जिसके उसके हाथो मे बिकने लगे । इधर यम को जीवो को पाप पुण्य भुगताने की आज्ञा दी तब ये यम जीवो को पाप-पुण्य भुगताने मे बहुत तकलीफ देने लगे । ।। ७६ ।।

जम की त्रास सही नही जावे ।। रूदन करे जीव रोवे ।।
चित्र गुप्तर घट घट मे बेठा ।। लिख लिख सेन पूजावे ।। ७७ ।।

वह यम की तकलीफ जीवो से सहन नही हुयी इसलिए जीव रूदन करके रोने लगे। इधर चित्र-गुप्त घट मे बैठकर किये गये कर्मो की निशानी प्रत्येक प्राणियों के शरीर पर और शरीर के अन्दर बनाने लगे।(चित्र गुप्त मे से चित्र,यह प्रगट किए गये कर्मो का निशान, शरीर के बाहर बनाने लगा और गुप्त यह गुप्त किए गये कर्मो का निशान शरीर के अन्दर करने लगा। ये जिव के निशान देखकर उसके प्रमाण से यमदुत जीव को भोग भुगताने लगे ।। ७७ ।।

चवदा क्रोड़ चड़े जम किंकर ।। मंडमे धूम मचाई ।।
हां हां कार करे करे हंस क्रणा ।। जब साहेब सुण पाई ।। ७८ ।।

यम किंकर(यमदूत)चौदह करोड़ पैदा किए । उन्होने सृष्टी मे धूम मचा दी जीव हाहाकार करने लगे और करूणा करने लगे । जीव की करूणा मालिक ने सुनी ।७८।

उपजे खपे पड़े जिव प्रळे ।। दुख सुख बारंम्बारा ।।
जब सुण आवाज हुई अवगत की ।। सिरजूं संत हमारा ।। ७९ ।।

और मालिक ने देखा तो बहुत से जीव उपज याने जन्म ले रहे है और बहुत से जीव खपकर मर रहे है इस प्रकार से प्रलय मे पड रहे है। बहुत से जीव वारंवार कुकर्म से दु:ख मे और सुकर्मो से सुख मे जाते दिखे तब अविगत की आवाज(आकाशवाणी)हुयी की जीवो के उद्धार के लिए मै मेरे संत भेज रहा हूँ ।। ७९ ।।

ऊठी धुन्न सकळ जग धूज्यो ।। सुर नर करे बिचारा ।।
सिर्जण हार संत कूं भेज्या ।। दीया सब्द आधारा ।। ८० ।।

उस जोर से हुयी धुन्न से,सारा जगत काँपने लगा। देव और मनुष्य विचार करने लगे की हम सबके मालिक ने जीव तारने के लिए,संत को अपने शब्द का आधार देकर भेजा है ।।८०।।

कवित ।।

अणभे उर संग फोज ।। अरथ आवध कऊँ भाया ।।
चरचा घुरे निसाण ।। तोफ दिष्टंग कहाया ।।
ग्यान भेद अमराव ।। राग सिंधु जस गावे ।।
मत्त फोजां मे सूर ।। जोर स्मसेर बजावे ।।

अे फोजां जिण पास हे || ज्यां सूं जुटे न कोय ||
सब ग्यानी सुखराम के || कर धर सन्मुख होय ||

वे संत किस तरहसे आये,कहोगे तो उनके हृदयमे अणभे(भयरहीत)और अनुभव ली हुयी बातो की फौज है। अनुभव लेकर उसका अर्थ जानना ही उनके अनेक प्रकारके आयुध (शस्त्र)है। उस संत की चर्चा और ज्ञान यही उनके गरजनेवाले अनेक निशान है । इनका दिया हुआ दृष्टान्त ही,उनकी तोप है। तोप से जैसे किला गिर पडता है,वैसे है उनके दिए गये दृष्टान्त से भ्रम के किले गिरकर,भ्रम मिट जाता है। उनका ज्ञान और उनका भेद यही उनके उमराव है। उनका लोग यश गाते है यही उनका सिंधू राग है। युद्ध के समय सिंधू राग सुनकर,शूरत्व उत्पन्न होता है,वैसे ही उस संत का यश सुनकर दूसरो को भक्ती मे शूरत्व उत्पन्न होता है। उनका मत ही उनकी फौज है। ज्ञान का जोर ही उनकी तलवार है। तो ये ऐसी फौज,अपने साथ मे लेकर आये हुए संत उनसे कौन जुटेगा मतलब कोई सामना नही करेगा। उनके सामने आने की किसकी भी हिम्मत नही होगी । इसलिये सभी ज्ञानी ऊन संतोको हाथ जोडकर उनके सम्मुख हो जाते ।

साखी ||

पद बोले बाणी कहे || भजन करे भरपूर ||
सो पूरा सुखरामजी || तां मुख बर्से नूर || १ ||

वे अपने पद बोलने लगे,वाणी कहने लगे और भजन करने लगे । भजन भरपूर करने लगे । ऐसे पूरे संत सुखरामजी महाराज उनके मुख पर नूर(तेज)झलकने लगा । || १ ||

सो जन पुंथा सिखर मे || साखज भरे अनेक ||
सो हरजन सुखराम के || ब्रम्ह सरूपी देख || २ ||

वे संत बंकनाल के रास्ते से ब्रम्हाण्ड मे पहुँचने की अनेक साक्ष्य भरने लगे । ऐसे ये हरी के जन याने राम जी के जन सुखरामजी महाराज को उन्हे सतस्वरुप ब्रम्ह स्वरूपी दखो || २ ||

जिंग शब्द हे गिगन मे || भंवर गुफा के मांय ||
सुर पारख सुखराम के || सुण नर देवळ जाय || ३ ||

उनके शिखर मे याने ब्रम्हाण्ड मे भंवर गुफा मे जींग शब्द की ध्वनी हो रही है । जैसे देव की परख सुनकर लोग मंदिर मे जाते है वैसे ही इन संत की परख सुनकर जीव उनके पास आने लगे । || ३ ||

इंद्र पिलावे नीर रे || देस गांव घर जोय ||
पूरा संत सुखरामजी || ज्यांरे अे अंग होय || ४ ||

जैसे इंद्र घर-घर जाकर पानी पिलाता है । देशो-देशी,घर-घर ,गाँव-गाँव मे पानी देता है । ऐसे ही पूरे संत सुखरामजी महाराज का भी यही स्वभाव है । || ४ ||

पवन बाजे देस मे || बिन तेड़यो जुग माय ||
पूरा संत सुखरामजी || ग्यान बतावे जाय || ५ ||

पवन याने हवा देश मे बहती है । बुलाये बिना संसार मे हवा चलकर आती है ऐसे ही पूरे संत सुखरामजी महाराज,जाकर ज्ञान बताते है । || ५ ||

सूरज के क्या चाय हे || दोड़यां फिरे हमेस ||
यूं पूरा संत सुखरामजी || मांड चेतावे देस || ६ ||

सुर्य को क्या गरज है कि वह हमेशा फिर रहा है ऐसे पूरे संत सुखरामजी महाराज पृथ्वी के देश–देश मे जाकर जीवो को जागृत कर रहे है । || ६ ||

देस गांव घर से रमे || करे उजाळो आय ||
युं पूरा संत सुखरामजी || ग्यान बतावे जाय || ७ ||

सुर्य देशो मे,गाँवो मे,घरो मे,शहरो मे सभी जगह आकर प्रकाश देता है ऐसे पूरे संत सुखरामजी महाराज,देशो–देशी,गाँवो–गाँव,घर– घर ज्ञान बताने जाते है । || ७ ||

चोपाई ||

साध आप साहेब अवतारी || पूजा बिस्न उठाई ||
जोग ध्यान संकर तज भागो || रंरंकार लिव लाई || ८१ ||

ऐसे साधू संत साहेब के अवतार,संसार मे आते ही,विष्णू ने पूजा उठा दी। विष्णू की पूजा उठी हुयी देखकर योग ध्यान छोडकर,शंकर भागा और ररंकार की लव लगाकर बैठ गया । || ८१ ||

ब्रम्हा बेद किया सब झूटा || ध्रमराय डंड डाऱ्या ||
चित्र गुप्तर लेखन धर दीनी || पाप पुन्न खत फाऱ्या || ८२ ||

और संतो ने ब्रम्हा के सभी वेद झूठे कर दिए तब धर्मराय ने डंडा फेक दिया । चित्र–गुप्त ने लिखने का काम छोडकर लेखनी फेक दी । और पाप पुण्य के हिसाब का, कागज फाड डाले । || ८२ ||

नाव निसाण रूप्या म्रत मंडळ || गढ मे नोपत बागी ||
सुणकर आवाज सकळ हंस चेत्या || राम भजन धुन्न लागी || ८३ ||

संतो के नाम का निशान मृत्यु मंडल मे गाड दिया गया। गढ मे याने ब्रम्हाण्ड मे नाम की नौबत(नगाडे)बजने लगी। उनका ज्ञान सुनकर सभी हंस(जीव)जागृत हुए,उनकी राम भजन की ध्वनी लग गयी । || ८३ ||

बेमुख जीव हुवा सब सनमुख || मोख पंथ किया बेतां ||
बाट घाट कोई बिघन न ब्यापे || रामराम मुख केतां || ८४ ||

जो जीव विमुख हुए,वे सभी सम्मुख हो गये और मोक्ष का मार्ग बहता किया । मुख से राम नामका उच्चारण करने से रास्ते मे या घाट मे कोई विघ्न नही रहे । || ८४ ||

मेटया मत्त किया तत निर्णा ।। नीरक्षिर ज्यूं न्यारा ।।
माया ब्रम्ह पड़या उलझेड़ा ।। न्याव चुकाया सारा ।। ८५ ।।

सभी मत मतान्तर मिटाकर सार वस्तु का याने सतस्वरुप ब्रम्ह का निर्णय किया। जैसे पानी और दूध अलग-अलग है ऐसा माया और ब्रम्ह आपस मे गुथ्थम गुथ हो गये थे ऐसे माया क्या और ब्रम्ह क्या,यह जीव को समझ मे आता नही था तो उसका निर्णय करके बताया ।।।८५।।

जे जै कार भयो जग सारे ।। हंस बंद तें छूटा ।।
ब्रम्हा बिस्न करे अस्तुती ।। सब मे बासा तूटा ।। ८६ ।।

सारे संसार मे संतो की चारो ओर जय जयकार होने लगी। जीव बंदी से छूट गये तब ब्रम्हा,विष्णू आकर संतो की स्तुती करने लगे और हमारा सभी आधार टूट गया ऐसे कहने लगे । ।। ८६ ।।

सक्ती आण भई संत दासी ।। संकर सीस नवावे ।।
ध्रमराय कूं पेल पंगातळ ।। हंस मोख कूं जावे ।। ८७ ।।

तब शक्ती आकर संतो की दासी हो गयी। शंकर आकर संतो का नमन करके,प्रणाम करने लगा और मोक्ष का रास्ता धर्मराय के(यमके),सिरपर पैर रखते हुए शुरू किया । मोक्ष के रास्ते की खिडकी मे धर्मराय आडा बैठा हुआ है उसके सिर को सीढी बना कर यानी सिर पर पैर रखकर मोक्ष मे जाने का रास्ता ययय बनाया । ।। ८७ ।।

धिन धिन साधाँ धिन्न हो साहेब ।। धिन धिन सता तुमारी ।।
काट जंजाळ जीव निस्ताऱ्यां ।। किया मोख इधकारी ।। ८८ ।।

धन्य-धन्य आप साधू,धन्य आप साहेब और धन्य है आपकी सत्ता। जीवो को जाल काटकर ,छुटकारा किए और जीव को मोक्ष का अधिकारी बनाये । ।। ८८ ।।

सागर क्षिर समे कोई ब्रम्हा ।। सुरपत जाय पुकारे ।।
लूं अवतार हुई नभ बाणी ।। असुर मार सुर तारो ।। ८९ ।।

अब ऐसे आये हुए संत जीवो को लेकर मोक्ष मे चले गये । संत के मोक्ष मे जाते ही जैसे स्कूल से अध्यापक के कहीं बाहर जाते ही बच्चे धूम मचाने लगते है वैसे ही देवो ने पुन: उपद्रव शुरू किया। इन देवो ने अपने मत की स्थापना करने के लिए पुन: शुरूवात किया । अपने मत की स्थापना करने के लिए राक्षस उत्पन्न किया और उन्होने ही उस राक्षस को वरदान देकर प्रबल किया वह राक्षस जीवो को बहुत कष्ट देने लगा। उस राक्षस के कष्ट से मनुष्य और सारी सृष्टी दु:खी हो गयी। तब उस समय ब्रम्हा और इन्द्र क्षिरसागर मे जाकर,उस सोये हुए विष्णू की पुकार की। तब आकाशवाणी हुयी कि मै अवतार लेता हूँ और राक्षस को मारकर,देवताओं को तारण करता हूँ । ।। ८९ ।।

यूं अनीत करे अे देवा ।। पंथ आपणो थापे ।।

तत्त पंथ आद ब्रम्ह को मेटे ।। जब ब्रम्हई आय उथापे ।। ९० ।।

ऐसी आकाशवाणी हुयी और विष्णू अवतार लेकर जगत मे आया और राक्षसो को मारा तब देव मनुष्यो से कहने लगे,कि देखो विष्णू भगवान ने सहायता की नही तो यह राक्षस सभी को खा जाता इसलिए अब तुम विष्णू की शरण मे जाकर विष्णू की ही भक्ती करो ये देव(ब्रम्हा,विष्णू,महेश)अपने पंथ की स्थापना करने के लिए ऐसी अनीती करके अपने पंथ की स्थापना करते है। यह तत पंथ सार ब्रम्ह का आदी से रास्ता है उसे ये देव मिटाते है तब ब्रम्ह ही आकर उसे थापता है ।।९०।।

सिरजण हार काज इण सिरज्या ।। थे जाय रचो संसारा ।।
अे आप आय सिर्जण होय कर ।। बण बेठा बट फारा ।। ९१ ।।

इन देवों को सिरजन हार ने इसलिए भेजा है कि तुम जाकर संसार की रचना करो परन्तु ये(ब्रम्हा,विष्णू,महेश)स्वयं आकर,स्वयंही सिरजनहार बनकर,रास्ते के लुटेरू बनकर बैठ गये । ।। ९१ ।।

मारे बाट देव बट फाड़ा ।। मोख पंथ अटकावे ।।
अमर पुरस अजोणी साहेब ।। जग मे संत उपावे ।। ९२ ।।

अब ये देव(ब्रम्हा,विष्णु,महेश)रास्ते के लुटेरू की तरह लूटने लगे और मोक्ष के रास्ते मे अटकाने लगे तब अमर पुरूष अयोनी साहेब पुन: संसार मे संत उत्पन्न करते है ।।९२।।

दोहा ।।

आ रचना बेराट की ।। रचि इसी बिध राम ।।
दूजो समरथ कौ नही ।। ब्होर रचे सुखराम ।। ९३ ।।

यह इस वैराट की रचना इस तरह से राम ने की । अब दूसरा समर्थ कौन है,कि पुन: रचना करेगा । ।। ९३ ।।

तीन लोक जब ही रच्या ।। दियो नाव आधार ।।
सुखदेव ब्रम्हा बिस्न सिव ।। सब बेठा पच हार ।। ९४ ।।

यह त्रिलोक की रचना सत नामका ही आधार देने पर हुयी । सत नाम के आधार के बिना ब्रम्हा,विष्णु,महेश सभी पच-पच कर हार कर बैठ गये । तो भी रचना सत नाम के आधार के बिना हुयी नही । ।। ९४ ।।

राम नाम सत पंथ हे ।। चोथा पद कूं जाय ।।
और पंथ तिहुँ लोक मे ।। फिर फिर गोता खाय ।। ९५ ।।

राम नामका सच्चा पंथ है। यह पंथ चौथे पद मे जाता है। राम नाम के अलावा जो दूसरे पंथ है,वे त्रिलोक मे याने स्वर्ग,मृत्यु और पाताल मे फिर-फिरकर गोते खाते है। ।।९५।।

साचां सत्तगुरू जब मिले ।। मेटे ओ उळझाड़ ।।
सत्तगुर बिन सुखराम केहे ।। सब जग पड़यो ऊजाड़ ।। ९६ ।।

जब सच्चे सतगुरू मिलेंगे तभी यह उलझन मिटेगी। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि सतगुरू के बिना सारा जगत बिना आसरे का उजाङ पडा हुआ है । ।।९६।।

ब्रम्ह अजोनी अमर हे ।। निराकार निर्धार ।।
अंत अनीत देवा करे ।। जब लेवे जन अवतार ।। ९७ ।।

वह ब्रम्ह तो अयोनी अमर है । निराकर और निराधार है । ये देव जब अनीती की अती करते है तब संसार मे संत अवतार लेते है । ।। ९७ ।।

जम जालम की त्रास सूं ।। हंसा करी पुकार ।।
सुखिया साहेब आवीया ।। ले जन को अवतार ।। ९८ ।।

यम बहुत जालिम है,उस यम की त्रासदी से,हंस ने पुकार किया तब स्वयं साहेब ही संत का अवतार लेकर आये । ।। ९८ ।।

सुखिया संत छायाँ पड़े ।। जम पुरी मे आय ।।
जीवां की ज्वाला बुझे ।। क्रोध जमाका जाय ।। ९९ ।।

उस संत की छाया यम पुरी मे आकर पडने से यम का क्रोध चला जाता व यम द्वारा दी जा रही पीडा की ज्वाला मिटकर याने शांत हो जाती है ।। ९९ ।।

।। इति रचना ग्रंथ संपूरण ।।